CHAPTER 44

SANSKRIT

Doctoral Theses

01. अन्जू

साङ्ख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं वेब तंत्र का विकास ।

निर्देशक : डॉ. सुभाष चन्द्र

Th26222

सारांश

संस्कृत साहित्य में वेद अग्रणी हैं। चार वेद हैं और इन चारों वेदों में अपार ज्ञान विद्यमान है। इस ज्ञान को धारण करने और अन्य लोगों को समझाने के लिए दो प्रयास किए गए। प्रथम दर्शनास्त्र और अन्य ब्राह्मण और एपिनिदादादा ग्रंथ। वेदों के ज्ञान को तर्क सहित समझाने के लिए छह दर्शन लिखे गए। सभी दर्शन मूल रूप से मौजूदा ज्ञान को तर्क से सिद्ध करते हैं। दर्शन भी सामाजिक चेतना के अनेक रूपों में से एक है। दर्शन वह ज्ञान है जो परम सत्यों और सिद्धांतों और उनके कारणों की चर्चा करता है। दर्शनशास्त्र वास्तविकता की परीक्षा के लिए एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। दार्शनिक सोच मूल रूप से जीवन के अस्तित्व की खोज है। वस्तुतः दर्शन अस्तित्व और समाज का विज्ञान है, मानव सोच के सामान्य नियम और अनुभूति की प्रक्रिया है। मनुष्य प्राचीन काल से सोचता आ रहा है। उनके विचारों और अनुभवों ने एक स्थायी रूप ले लिया और समय के साथ दार्शनिक विचारों में परिवर्तित हो गए। इन दार्शनिक विचारों को प्रतिबिंबित करने के लिए, भारत और ग्रीस नामक दो महान राष्ट्रों का गठन किया गया। इन दोनों विद्यालयों में तात्ज्ञान के आधार पर दर्शन की संकल्पना की गई थी, लेकिन भारत में यह अवधारणा तात्ज्ञान के साथ-साथ आत्मज्ञान, मोक्ष आदि के रूप में प्रतिबिम्बित हुई। सामान्यत: दर्शन और दर्शन को पर्यायवाची माना जाता है, परन्तु इन दोनों में स्पष्ट अन्तर है। दो। दिलोस्ती ('दिलोस' + 'सोदिया') शब्द दो ग्रीक शब्दों के योग से बना है, जिसका अर्थ है - ज्ञान के प्रति अनुराग। दर्शन शब्द की उत्पत्ति 'दृश' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'देखना'। एपिनिड में पाई गई व्युत्पत्ति के आधार पर दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति 'दृश्यतेनेत दर्शनम्' के रूप में हुई है। तो व्युत्पत्ति का अर्थ है जिसके द्वारा देखना है। भारतीय दर्शन का लक्ष्य वास्तविकता का ज्ञान और एक सर्वोच्च की प्राप्ति है। जबकि दिलोस्ती में विभिन्न नदियों का विश्लेषण किया जाता है। अतः पाश्चात्य दर्शन की अपेक्षा दर्शन में चेतना का होना आवश्यक है।

विषय सूची

1. भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय एवं साङ्ख्य-योग दर्शन 2. पारिभाषिक शब्द, साङ्ख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का परिचय एवं सर्वेक्षण 3. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण 4. योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण 5. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेब तंत्र का विकास एवं परिचय तथा दर्शन से सम्बन्धित उपलब्ध सिस्टम से तुलना। निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान की संभावनाएँ। परिशिष्ट। प्रकाशन सूची। शोध प्रस्तुतिकरण प्रमाणपत्रसूची।

02. अदिति

रामदेवमिश्रकृत काशिकावृत्तिप्रदीपम् के प्रथम एवं द्वितीय अध्याय का समीक्षात्मक सम्पादन एवं अनुशीलन।

निर्देशक : डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य

Th 26211

सारांश

शोध का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य ज्ञान के सभी क्षेत्रों में नए और मौलिक तत्वों की जांच करना और उन्हें उचित रूप से प्रस्तुत करना है। मेरे शोध का शीर्षक है "कैकवरी प्रदीपमए रामदेवीमाश्रित के पहले और दूसरे अध्यायों का आलोचनात्मक संपादन और पुनरीक्षण"। विभागीय अनुसंधान समिति (क्ब्द्धए संस्कृत विभागए दिल्ली विश्वविद्यालय ने मेरे शोध शीर्षक के विषय की शोध उपयुक्तता व्यवहार्यता और शोध के औचित्य से संबंधित विभिन्न पहलुओं से जांच करने के बाद पीएचडी से सम्मानित किया। . की डिग्री के लिए अनंतिम स्वीकृति प्रदान की गईए श्बोर्ड ऑफ रिसर्च स्टडीज दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा अनुमति पत्र (मेमोरेंडम लेटर) प्राप्त होते ही दिनांक 13.03.2018 से आधिकारिक तौर पर शोध कार्य शुरू कर दिया गया।

विषय सूची

1. काशिकावृत्तिप्रदीप का परिचय एवं पाण्डुलिपि का सम्पादन विधि 2. प्रथम अध्याय का समीक्षात्मक सम्पादन एवं अनुशीलन 3. द्वितीय अध्याय का समीक्षात्मक सम्पादन एवं अनुशीलन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

03. UPADHYAYA (Pawan Kumar)

Comparative Examination of the Nature of Consciousness in Advaita Vedanta and Western Philosophy of Mind.

Supervisor : Dr. Ashutosh Dayal Mathur

Th 26202

Abstract

There has been a lively debate, both in the Indian and Western traditions, about the nature of consciousness. The central issues in the philosophy of mind are both conceptual and empirical. The issues like what is consciousness? What are the essential features of mind and what distinguishes the mind from the body? What are mental states? What are feelings and emotions? What is the nature of the self or Ātman or manas? What is the relation between them? – these preoccupations are primarily conceptual. Whereas questions like, are mental states property of the brain? Is consciousness causally connected with the brain? Are mental states identical with the brain states or other physical states? What is the relationship between the self and the body? -are empirical questions. Both Indian and western thinkers have attempted in their own ways to answer these questions. These may be reduced to study three phenomena- soul, mind and brain. Scientists are also puzzled by these questions. Science and philosophy differ while dealing with these issues. Neurologists and neuroscientists are of the opinion that the mental states are an offshoot of the neuronal activities. They even go to the extreme of saying that mind or self is identical with the brain. In Neuroscience the concept of mind or self is not separate from the brain. It is noteworthy that “Modern neurosciences and ancient materialistic school do not subscribe to the

existence of self."1 In Western philosophy and psychology, the term mind or self has been used interchangeably. There is no clear-cut and sharp distinction between the two. Whereas in Indian philosophy, mind and self are different entities; and there is a clear and sharp distinction between the two. Self is conscious and non-material whereas. mind (Antahkarnam or Manas ot citta) is material. However, in Indian philosophy we do not find much discussion on the idea of brain. Why is it so is an interesting issue for discussion? A comparative study of the two traditions shall help us in a deeper understanding of the nature of mind, self, and brain. A comparative study of the two shall enrich both the Indian and Western philosophy of mind. Philosophy of mind is a study of various aspects of mind and its relation with the outer world. When I perceive an object in this world, the question arises, what is the nature of perception? Is there an 'internal agent' who perceives the object or is it neuro-chemical activities in brain, which causes brain to have perception? Various philosophers have contributed to these questions on the nature and function of mind. On the one hand, in philosophy, soul is regarded to be an immortal entity, which enters the body at birth and departs at death. It is the sole cause or seat of perception. On the other hand, in neurosciences, brain is a physical entity, where conscious states, processes and structures take place. Consciousness is an offshoot of these processes and therefore can be reduced to the brain.

Contents

1. Introduction 2. Upanisads and Presocratics 3. Gaudapada and Plato 4. Citsukhacarya and descartes 4- David chalmers and K.C. Bhattacharya 5. Philosophy of science and spirituality and Western thought and Advaita. Conclusion. Bibliography.

04. कुलदीप कुमार

प्रातिशाख्य एवं अष्टाध्यायी की संन्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. सत्यपाल सिंह

Th 26223

सारांश

व्याकरण वह शास्त्र हैए जिसके द्वारा हम सुन (लिखना बोलना और पढ़ना सीखें। व्याकरण का अर्थ है- व्याक्रियान्ते व्युत्पाधंते। शब्दाहः अनेन इति व्याकरणम अर्थात शास्त्रों के माध्यम से शब्दों के ज्ञान के लिए प्रकृति और प्रत्यय को विभाजित करके शब्दों की व्युत्पत्ति वह शास्त्र इसे व्याकरण कहते हैं। भाषा व्याकरण के बिना हो सकती है लेकिन एक स्पष्ट और प्रगतिशील भाषा के लिए व्याकरण का बहुत महत्व है। संस्कृत भाषा में व्याकरण इसके लिए इसे श्मुख्य व्याकरण स्मृतिम्श कहा गया है जिसका अर्थ है कि व्याकरण उन्हें वेदों का प्रमुख माना जाता है। इस प्रकार मुख के बिना हमारे शरीर का पोषण संभव है। नहींए इसी प्रकार वेद भी व्याकरण के अभाव में निर्जीव ही रहेगा। इतना प्राचीन अनादि काल से भाषा के साथ आधुनिक व्याकरण का महत्व निर्विवाद है। इसका आगमन हो रहा है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. प्रातिशाख्यों के अनुसार स्वर-सन्धि का स्वरूप एवं पाणिनीय व्याकरण के आधार पर तुलनातमक विवेचन 3. प्रातिशाख्यों के अनुसार व्यंजन-सन्धि का स्वरूप एवं पाणिनीय व्याकरण के

आधार पर तुलनातमक विवेचन 3. प्रातिशाख्यों के अनुसार विसर्ग-सन्धि का स्वरूप एवं पाणिनीय व्याकरण के आधार पर तुलनातमक विवेचन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

05. गिरिराज

काव्यप्रकाश की लीला टीका का सम्पादन एवं समीक्षण (नवम एवं दशम उल्लास से सम्बद्ध।

निर्देशक : प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय

Th 26212

विषय सूची

1. टीका एवं टीकाकार का परिचय 2. काव्यप्रकाश के नवम उल्लास की लीला टीका का निर्णीत-पाठ 3. काव्यप्रकाश के नवम उल्लास की लीला टीका का निर्णीत-पाठ 4. शब्दालंकार एवं लीला टीका 5. अर्थालंकार एवं लीला टीका। उपसंहार। परिशिष्ट। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

06. नीतीशकुमार

अष्टाध्यायीमहाभाष्ये शिवरामन्द्रसरस्वतीकृतस्य रत्नप्रकाशस्य समीक्षात्मकमध्ययनम् (कारककप्रकरणस्य विशेषसन्दर्भे)।

निर्देशक : प्रो. ओमनाथबिमली एवं डॉ. विजयशंकर द्विवेदी

Th 26219

विषय सूची

1. पाणिनीयव्याकरणपरम्परायां कारकविमर्शः 2. कारके सूत्रविमर्शः 3. ध्रुवग्रहणप्रयोजनविमर्शः 4. सम्प्रदानसंज्ञापकरणम् 5. साधकतमं करणम् 6. अकथितकर्मप्रकरणम् 7. ण्यतकर्मसंज्ञाप्रकरणं कर्तृहेतुसांाप्रकरणञ्च। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

07. प्रवीण

वाल्मीकि रामायणोपजीवी संस्कृत नाटकों की परम्परा एवं हनुमन्नाटकम्।

निर्देशक : प्रो. दया शंकर तिवारी

Th 26208

विषय सूची

1. वाल्मीकि रामायणोपजीवी संस्कृत नाटकों एवं हनुमन्नाटकम् में कथावस्तु 2. वाल्मीकि रामायणोपजीवी संस्कृत नाटकों एवं हनुमन्नाटकम् में पात्र योजना 3. वाल्मीकि रामायणोपजीवी संस्कृत नाटकों एवं हनुमन्नाटकम् में रस 4. वाल्मीकि रामायणोपजीवी संस्कृत नाटकों एवं हनुमन्नाटकम् में भाषा एवं शैली 5. वाल्मीकि रामायणोपजीवी संस्कृत नाटकों एवं हनुमन्नाटकम् में देश-काल। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

08. प्रशान्त

शब्दर्शन पर नागेशभट्ट के विचारों का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. रणजीत कुमार मिश्र

Th 26483

विषय सूची

1. भूमिका 2. पद-स्वरूप 3. शक्तिस्वरूप, शब्दवृतियाँ और शब्दार्थ-स्वरूप 4. पदार्थ-स्वरूप 5. स्फोट तत्व 6. अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद तथा तात्पर्यवाद 7. प्रतिभा-वाक्यार्थिवाद एवं वाक्यार्थतव। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

09. प्रियंका

पाणिनीय गणपाठगत शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग का अनुशीलन (5-8 अध्यारय पर्यन्त) ।

निर्देशक : डॉ. राजवीर शास्त्री

Th26229

विषय सूची

1. पाणिनीय गणपाठ का परिचय 2. पाणिनीय गणपाठ के पञ्चमाध्यायगत शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग 3. पाणिनीय गणपाठ के षष्ठाध्यायगत शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग 4. पाणिनीय गणपाठ के सप्तमाध्यययगत शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग 5. पाणिनीय गणपाठ के अष्टमाध्यायगत शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

10. प्रेरणा

विज्ञानभैरव एवं पातञ्जल-योगदर्शन कास तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज एवं डॉ. अजित कुमार

Th 26230

विषय सूची

1. परिकर्म विमर्श 2. ध्यानसवरूपविमर्श 3. समाधि स्वरूप एवं भेद 4. समाधि-सोपान विमर्श 5.मोक्ष का स्वरूप। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

11. पाण्डेय (गंगाराम)

पातञ्जलमहाभाष्य के प्रत्युदाहरणों का समीक्षातमक अध्ययन (प्रथम व द्वितीय अध्याय के संदर्भ में)।

निर्देशक : डॉ. सोमवीर सिंघल

Th 26205

विषय सूची

1. संज्ञा विषयक प्रत्युदाहरणों का विमर्श 2. परिभाषा विषयक प्रत्युदाहरणों का विमर्श 3. अतिदेश विषयक प्रत्युदाहरणों का विमर्श 4. कारक विषयक प्रत्युदाहरणों का विमर्श 5. समास विषयक प्रत्युदाहरणों का विमर्श 6. अन्य विध्यादि विषयक प्रत्युदाहरणों का विमर्श। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

12. पिंकी कुमारी

राजस्थान के प्रमुख संस्कृत अभिलेखों का साहित्यिक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. उमाशंकर एवं डॉ. अखिलेश कुमार दुबे
Th 26485

विषय सूची

1. राजस्थान में अभिलेख लेखन का इतिहास एवं साहित्यिक विवेचन 2. स्वीकृत अभिलेखों में छन्द योजना वार्णिक छन्द 3. स्वीकृत अभिलेखों में अलंकार योजना शब्दालंकार 4. स्वीकृत अभिलेखों में रसादि-योजना 5. स्वीकृत अभिलेखों में गुण-दोष विवेचन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

13. बलिष्ठ
शिवरामन्द्रसरस्वतीकृत महाभाष्यरत्नप्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन (स्त्रीतवव्यावस्था सम्बन्धी सूत्रों के विशेष सन्दर्भ में) ।
निर्देशक : डॉ. रणजीत कुमार मिश्र
Th 26213

विषय सूची

1. पातञ्जल महाभाष्य की व्याख्यान परम्परा में रत्नप्रकाश का स्थान 2. स्त्रीतव की परिभाषा 3. रत्नप्रकाशकार के अनुसार स्त्री प्रत्यय भेद विमर्श 4. रत्नप्रकाश टीका का वैशिष्ट्य (स्त्री प्रत्यय प्रकरण के परिप्रेक्ष्य में) 5. रत्नप्रकाश टीका का समीक्षातमक अनुशीलन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

14. भट्टराई (युवराज)
वाक्यपदीय के सम्बन्धसमुद्देश पर अम्बाकर्त्री टीका का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. ओमनाथ बिमली
Th 26215

विषय सूची

1. अवतरणिका 2. शब्द विवेचन 3. अर्थ स्वरूप निरूपण 3. सम्बन्ध समुद्देश में सम्बन्ध का स्वरूप विषय चिन्तन 4. सम्बन्ध के प्रकारों का विवेचन 5. योग्यता सम्बन्ध की नित्यता का विवेचन 6. शब्द द्वारा असदर्थ का अभिधान 7. भाव और अभाव में कालकृत भेद की असम्भवता। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

15. ममगाई (प्रवीण)
ऋग्यजुर्वेद ज्योतिष एवं आथर्वण ज्योतिष का अन्तः सम्बन्ध।।
निर्देशक : डॉ. उमाशंकर
Th 26227

सारांश

संपूर्ण शोध प्रबंधन के सार के रूप में यहां कुछ मुख्य बिंदुओं का उल्लेख किया गया हैए जिसके माध्यम से हम संपूर्ण शोध प्रबंधन के सार को समझ सकेंगे। यहाँ वैदिक साहित्य में वर्णित ज्योतिषीय विषयों के आधार पर ऋग्ज्योतिषए यजुषुज्योतिष तथा अथिविज्योतिष तीनों ज्योतिषीय विषयों में परस्पर सम्बन्ध दर्शाने का प्रयास किया गया है। इस आधार पर कि तीनों ज्योतिषीय विषयों को एक साथ एक नए रूप में पाठकों के

सामने प्रस्तुत किया जा सकता हैए शोधकर्ता ने शोध कार्य के रूप में शीर्षक "ऋग्यजुर्वेद ज्योतिष और अथर्ववन ज्योतिष का अंश संबंध" चुना। दीनगोर काल में ज्योतिष के अनेक ग्रन्थों की रचना हुईए परन्तु दीनग के समय तक केवल एक सुदृढ लगध ज्योतश ही ऐसा ग्रन्थ थाए जो ज्योतिष का मौलिक एवं प्रमाणिक ग्रन्थ था। देयांग ज्योतिष से पहलेए ज्योतिष का पूरा विज्ञान मूल वैदिक ग्रंथों ब्राह्मण ग्रंथों और देयांग साहित्य में बिखरा हुआ था। जिसका अधिकारिक रूप हमें देवांग ज्योतिष के रूप में प्राप्त होता है।

वषय सूची

1. वैदिक साहित्य में वर्णित मूल ज्यातिषीय तत्त्व एवं उनका संक्षिप्त परिचय 2. वैदिक साहित्य में नक्षत्र विवेचन 3. वैदिक संहिताओं में काल की स्थूल एवं सूक्ष्म इकाईयाँ 4. वैदिक संहिताओं में (अंक) संख्यात्मक पद्धति 5. वैदिक संहिताओं में ज्योतिष आधारित विभिन्न यज्ञ-होमादि विधान। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

16. महेश कुमार
स्मृतिकौस्तुभ, वीरमित्रोदय एवं भगवन्तभास्कर में प्रतिपादित राजनीतिक चिन्तन एक तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. मीना कुमारी
Th 26487

विषय सूची

1. शासक की अवस्थिति 2. मंत्रिपरिषद् व अन्य अधिकारियों की संरचना 3. दृर्ग का महत्व और उपादेयता 4. वितीय प्रबंधन 5. सामरिक संरचना 6.राष्ट्र 7. अंतर्राष्ट सम्बन्ध। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

17. यादव (राकेश कुमार)
स्वातन्त्र्योत्तरवर्त्ती संस्कृत काव्यशास्त्र के अभिनव आयाम।
निर्देशक : प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय
Th 26486

विषय सूची

1. प्रस्ताविकगत अभिनव आयाम 2. काव्यस्वरूपगत अभिनव आयाम 3. सौन्दर्यविधानगत अभिनव आयाम 4. रस-विषयक आयाम (रस-विषयक अभिनव ऊहा) 5. अभिनव वैचारिक आयाम। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

18. ऋचा
मुगल शासकों के आश्रय में प्रणीत संस्कृत-काव्य : एक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी
Th 26218

सारांश

वर्तमान शोध में संस्कृत साहित्य की दृष्टि से मध्यकालीन भारतीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। केवल मध्यकालीन संस्कृत लेखकों में ब्राह्मण मुगल बादशाहों के संरक्षण में संस्कृत साहित्य की रचना कर रहे थे। रहीम जैसे विद्वान और मुस्लिम संस्कृतज्ञ भी संस्कृत साहित्य की रचना में शामिल थे। यदि

समग्र रूप से विचार किया जाए तो इस काल का संस्कृत साहित्य सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। राजनीतिज्ञ कर्णिश सच है, लेकिन इन रचनाओं में मुगल बादशाहों की उदारता का पक्ष भी सामने आता है।

विषय सूची

1. अकबर के आश्रय में प्रणीत संस्कृत साहित्य एवं उनके प्रणेता : एक अध्ययन 2. जहाँगीर के आश्रय में प्रणीत संस्कृत साहित्य एवं उनके प्रणेता : एक अध्ययन 3. शाहजहाँ के आश्रय में प्रणीत संस्कृत साहित्य एवं उनके प्रणेता : एक अध्ययन 4. अन्य मुगल शासकों के आश्रय में प्रणीत संस्कृत साहित्य एवं उनके प्रणेता : एक अध्ययन 5. अन्य मुस्लिम शासकों के आश्रय में प्रणीत संस्कृत साहित्य एवं उनके प्रणेता : एक अध्ययन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

19. राजेश कुमार

जयदेव कृत प्रसन्नराघवम् नाटक का औचितयसिद्धान्तपरक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. वेद प्रकाश डिंडोरिया

Th 26488

सारांश

समाज ही व्यक्ति या इतिहासकार का निर्माता होता है। समाज से अलग होकर हम कुछ साबित नहीं कर सकते। हम जो भी करते हैं समाज के लिए करते हैं। हम इतिहास में प्राचीन समाज की घटनाओं का विश्लेषण करके उनका अध्ययन करते हैं। लेकिन हम उस समाज का पूरा विश्लेषण नहीं कर सकते। बौद्ध दार्शनिक आचार्य नागार्जुन ने कहा है कि हम एक ही नदी में दो बार स्नान नहीं कर सकते क्योंकि - सब कुछ एक ही समय मेंए वही स्थितिए यहां तक कि जिस जल में हमने स्नान कियाए वह हमें दूसरी बार नहीं मिल सकता। . जिस पानी में हमने एक बार प्रार्थना की थी वह नदी में बहुत दूर तक बह गया है। हम जहां भी नदी में नहाते हैं वहां सबसे पहले नहाते हैं। इस अवधारणा पर कुछ ऐतिहासिक विचारकों का मत है कि एक इतिहासकार द्वारा दो पुस्तकें नहीं लिखी जा सकतीं। डॉ. अंबेडकर ने अमेरिका और लंदन के विश्वविद्यालयों से अर्थशास्त्र शोध किया।

विषय सूची

1. कवि एवं कृतित्व परिचय 2. पद, वाक्य एवं प्रबन्धार्थ विषयक औचित्य 3. प्रसन्नराघवम् में काव्यशास्त्रीय औचित्य 4. प्रसन्नराघवम् में व्याकरण विषयक औचित्य 5. प्रसन्नराघवम् में लोक विषयक औचित्य 6. प्रसन्नराघवम् में कविविषयक औचित्य 7. प्रसन्नराघवम् में अन्य सम्भावित औचित्य। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

20. राणा (आयुषी)

धातुप्रदीप एवं माध्वीयधानुवृति का तुलनातमक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. मोहिनी आर्या

Th 26204

सारांश

वैदिक और लौकिक द्वैतवादए संस्कृत वाक्पटुता के गहनतम और सुविचारित भंडार मेंए भाषा के मूल वेदों में मुख्य व्याकरण का बहुत बड़ा योगदान है। व्याकरण की परम्परा वेदों से लेकर आधुनिक काल तक अनवरत है। ऐन्द्रए चन्द्रए कश्कृत्स्नए अपिशालीए सारस्वतए शाक्तायन आदि महान आचार्यों ने इस परम्परा को गति प्रदान की है। कालांतर में जब यह भण्डार विशाल और विस्तृत हो गयाए तब सूक्ष्ममेध के आचार्य महर्षि पाणिनि ने व्यवस्थित अनुशासन के नाम पर व्याकरण को पुनर्जीवित किया। वर्तमान समय में व्याकरण वेदाघो के रूप में इस प्रमाणित महर्षि पाणिनि का व्याकरण साघूपघो परम्परा में विद्यमान है। इस व्याकरण को पूर्ण रूप से पूर्ण करने के उद्देश्य से पाणिनि ने पाँच उपदेशों की रचना की। अष्टाध्यायीए धातुपथए गणपथए उनादिपाठ और लिघोनुशासन। आचार्य कात्यायन ने इन पाँचों विद्याओं से सरोकार रखकर सम्पूर्ण पाणिनीय व्याकरण पर वर्तिकाओं की रचना की। शेषावतार महर्षि पतजलि ने पाणिनि के सभी सूत्रों और कात्यायन के वार्तिकों को समाहित करते हुए एक सुप्रसिद्ध महाभाष्य की रचना करके इस व्याकरण को सार्वभौमिक और पूर्ण बना दिया। वर्तमान समय में पाणिनीय व्याकरण के प्रत्येक ग्रन्थ पर अनेक व्याख्याएँए भाष्यए वृत्तियाँए भाष्य आदि उपलब्ध हैं।

विषय सूची

1. धातुप्रदीप एवं माधवीयधानुवृत्ति : एक परिचय 2. उभयगत साम्य एवं उनकी समीक्षा 3. उभयगत वैषम्य एवं उनकी समीक्षा 4. उभववृत्तियों के चिन्त्यस्थल एवं उनकी समीक्षा (भ्वादि से जुहोत्यादिगण पर्यन्त) 5. उभववृत्तियों के चिन्त्यस्थल एवं उनकी समीक्षा (दिवादि से कण्ड्वादिगण पर्यन्त)। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

21. रोहिताश कुमार

क्षेमेन्द्र विरचित बृहत्कथामञ्जरी के वेतालपञ्चविंशतिका भाग का औचित्यमूलक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. अजय कुमार झा

Th 26210

सारांश

संस्कृत साहित्य के प्रकाशमान नक्षत्रों में आचार्य क्षेमेन्द्र का स्थान बहुत ऊँचा है। उन्होंने कहानियोंए महाकाव्योंए लघु काव्यों तथा चरित्र ग्रंथों की रचना कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा से संस्कृत जगत को सराहने का काम किया है। वर्तमान में लगभग चालीस पुस्तकें उपलब्ध हैं। बृहत्कठमञ्जरी में अनंत पांडित्य और कहानी-कथन का प्रदर्शन हैए जिसमें क्षेमेंद्र की शब्द-शैलीए भावए कांतसम्मित उपदेशए अलघद्धारए रस और गुण आदि को आलोचक एक महान कवि की श्रेणी में मानते हैं। उन्होंने लक्ष्यग्रन्थों के साथ-साथ लक्ष्यग्रन्थों की रचना कर काव्यशास्त्र को एक नई दिशा प्रदान की है। श्अचित्य विचारचर्चाश इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ हैए जिसमें औचित्य की अवधारणा की व्याख्या कर औचित्य को काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त के रूप में स्थापित किया गया है। - प्रथम रूप में यह रसादि के समान काव्यात्मक तत्त्व है। दूसरे में इसे रससी (कविता) का जीवन-तत्त्व माना गया है- श्औचित्य रससि(स्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।श तीसरे में यह काव्य-समीक्षा का सार्वभौम सिद्धांत है।

विषय सूची

1. आचार्य क्षेमेन्द्र और उनका औचित्य सिद्धान्त 2. वेतालपाञ्चविंशतिका में साहित्यौचित्य 3. वेतालपाञ्चविंशतिका में भाषागतौचित्य 4. वेतालपाञ्चविंशतिका में सामाजिकौचित्य 5. वेतालपाञ्चविंशतिका में तात्त्विकौचित्य 6. वेतालपाञ्चविंशतिका अनभिहित औचित्य। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

22. लिपिका रानी

भारतीय संविधान में मानवाधिकार व मौलिक कर्त्तव्यों का विमर्श वैदिक संहिताओं के आलोक में।

निर्देशक : डॉ. टेकचन्द मीणा

Th 26206

विषय सूची

1. भारतीय संविधान की प्रस्तावना और वैदिक वाङ्मय 2. मूल अधिकार और वैदिक वाङ्मय 3. नीति निदेशक तत्त्व तथा वैदिक वाङ्मय 4. अधिकारों पर युक्तियुक्त निर्बंधन 5. अधिकारों और कर्त्तव्यों की वेश्विक स्वीकृति 6. मौलिक कर्त्तव्य और वैदिक वाङ्मय। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

23. विकास कुमार
नाट्यशास्त्र में धर्मी की अवधारणा।
निर्देशिका : प्रो. मीरा द्विवेदी
Th 26220

विषय सूची

1. एकादश नाट्य-संग्रह और उनमें धर्मी तत्त्व 2. आंगिक अभिनय में अंग-प्रत्यंग विषयक धर्मी 3. आंगिक अभिनय में उपांग एवं गत्यादि विषयक धर्मी 4. वाचिक अभिनय में धर्मी 5. सात्त्विक अभिनय में धर्मी 6. आहार्य अभिनय और धर्मी 7. लोकधर्मी -नाट्यधर्मी चिन्तन परम्परा का आधुनिक नाट्य-चिन्तन पर प्रभाव। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

24. शर्मा (आकांशा)
हरिचरितम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी एवं डॉ. अवधेश प्रताप सिंह
Th 26214

विषय सूची

1. हरिचरितम् महाकाव्य की कथावस्तु 2. हरिचरितम् महाकाव्य का नायक-विधान 3. हरिचरितम् महाकाव्य का रस-विधान 4. हरिचरितम् महाकाव्य का अलंकार-विधान 5. हरिचरितम् महाकाव्य में छन्द-विधान 6. हरिचरितम् महाकाव्य का महाकाव्यत्व-विधान। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

25. शर्मा (रीना रानी)
गोस्वामितुलसीदासचरितम् (महाकाव्यम्) का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन।
निर्देशिका : डॉ. मैत्रेयी कुमारी
Th26221

विषय सूची

1. गोस्वामितुलसीदासचरितम् में रस योजना 2. गोस्वामितुलसीदासचरितम् में रीति एवं गुण योजना 3. गोस्वामितुलसीदासचरितम् में अलंकार एवं छन्द योजना 4. गोस्वामितुलसीदासचरितम् में ध्वनि योजना 5.

गोस्वामितुलसीदासचरितम् में वक्रोक्ति योजना 6. गोस्वामितुलसीदासचरितम् में औचित्य विवेचना 7. गोस्वामितुलसीदासचरितम् : एक अवलोकन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

26. SHARMA (Shivangi)
Critical Analysis of State of Bovines in Vedas and its Relevance in Modern Context.
Supervisors : Prof. Ranjit Behera and D. Abhineet Kumar Srivastava
Th 262287

Abstract

The word Veda is derived from the root Vid, which means knowledge, to contemplate, attainment and entity. The meaning of the word has been determined on the basis of the meaning of the root located in the word. Etymology means the study of the origin of the word and the process of its development. Without knowing the meaning of Vedic hymns, their use should be avoided, Nirukta imparts knowledge of the meaning of those Vedic hymns on the basis of their interpretation. The Vedic hymns are related to the deities. Each sūkta has its own deity. There is a place of cow as a deity in the Vedas, so the Vedas in general, consider cow to be sacred or to be worshipped. Cow is said to be the mother of the whole world in Vedas. Just as a mother gives a special life by enduring all sorrows and living a normal life, giving all the comforts and facilities to her progeny, similarly the cow provides milk in the form of nectar to everyone by eating mere dry straws and drinking normal water.

Contents

1. Form of Cow in the Vedas 2. State of bovines in vedic period 3. Benefits from Cows 4. Condition of Bulls 5. Interpretation of Bovines by Modern scholars 6. Position of Bovines in Modern world. Epilogue. Conclusion. Bibliography. Appendix.

27. शुक्ला (प्रतिभा)
ब्रह्मकाण्ड की प्रमुख हिन्दी टीकाओं का समालोचनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. करुणा आर्या तथा डॉ. बलराम शुक्ल
Th 26209

सारांश

वर्तमान शोध के अतिरिक्त व्याकरण-दार्शनिक परंपराए इतिहास-भूगोल-विज्ञान आदि के अन्य विभाग तथा साहित्यए ज्योतिषए पुरालेखए वेद आदि के छात्र-छात्राएं व्याकरण-दर्शन से जुड़े प्रमुख विषयों का अध्ययनए सरल हिन्दी व्याख्या एक ही स्थान पर करते हैं। विभिन्न टीकाकारों की राय के माध्यम से करने में सहायक होगा। आपको विभिन्न टीकाकारों की अन्य टिप्पणियों पर अपना कीमती समय बर्बाद नहीं करना पड़ेगा। भर्तृहरि दर्शन पर प्राप्त प्राचीन टीकाओं की कठिनाई का निवारण और विषय को समझाने में आसानी होगी। प्रामाणिकता के लिए प्राचीन टीकाओं के मुख्य भागों का समेकित संकलन प्राप्त करना आवश्यक होगा। इस प्रकार उक्त शोध कार्य भर्तृहरि के दार्शनिक बिन्दुओं को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रकट करने में अपना महत्व सिद्ध कर सकेगा।

विषय सूची

1. शब्दब्रह्म का स्वरूप एवं उसकी शक्तियाँ 2. व्याकरणशास्त्र का महत्त्व भर्तृहरि तथा अन्य टीकाकारों के मत में 3. स्फोटतत्त्व निरूपण भर्तृहरि तथा अन्य टीकाकारों के मत में 4. भर्तृहरि मत में ध्वनि का स्वरूप एवं अन्य टीकाकारों का ध्वनिविषयक मन्तव्य 5. वाक्तत्त्वनिरूपण तथा शब्दस्वरूप। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

28. संदीप कुमार

योगवार्त्तिका में वर्णित कैवल्य का स्वरूप एवं सोपान : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी एवं डॉ. पवन कुमारी

Th 26217

सारांश

मनुष्य एक विचारशील प्राणी है वह अपने विवेक से सही और गलत का निर्णय करने में सक्षम है। मनुष्य ही कर्मयोनि की श्रेणी में आता हैए अन्य सभी जीव भोगयोनिमात्र हैं। मनुष्य अपने जीवन में अपनी मनःस्थिति के अनुसार शुभ अशुभ आदि कर्म करता रहता है। मनुष्य की विचारशीलताए विवेकए निर्णय लेने की क्षमता और कर्म करने की स्वतंत्रता के कारण ही उसे सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। यह श्रेष्ठ जीव जन्म-जन्मान्तर अनन्त क्लेशोंए कर्मों और कामनाओं से बँधकर भटकता रहता है और इस संसार को दुःख रूपी अपना परम लक्ष्य समझकर भोगता है। मनुष्य के इस द्वंद्वात्मक जीवन में सुख-दुख सदैव विद्यमान रहते हैं। सुख में मनुष्य सरलता से जीवन व्यतीत करता है और दुःख में विचलित हो जाता हैए यह उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। सांख्य दर्शन के अनुसार इन तीनों आध्यात्मिकए भौतिक और आध्यात्मिक दुखों से ग्रसित व्यक्ति की स्वाभाविक जिज्ञासा इनसे छुटकारा पाने की होती है। और मनुष्य उन्हें हटाने का उपाय खोजता है।

विषय सूची

1. योग की अवधारणा 2. समाधि की अवधारणा 3. कैवल्य का स्वरूप 4. उत्तम अधिकारी के लिए कैवल्यप्राप्ति के सोपान 5. मध्यमाधिकारी के लिए कैवल्य प्राप्ति के सोपान 6. मन्दाधिकारी हेतु कैवल्य प्राप्ति के सोपान। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

29. सिंह (जया)

मल्लिषेण सूरि की भारतीय न्यायदर्शन को देन (स्याद्वादमंजरी के संदर्भ में)

निर्देशक : प्रो. सत्यपाल सिंह

Th 26216

सारांश

चिन्तनशील मुनियों ने दु:खी की अनन्य और परम मुक्ति और अखंड आनंद के अस्तित्व के लिए जिस शास्त्र का अवतरण कियाए वह दर्शन नाम में निहित है। भारतीय दर्शन रूप और पद्धति की दृष्टि से दो भागों में विभाजित है- आस्तिक और नास्तिक। जैन दर्शन विचार के नास्तिक विद्यालयों में बहुत प्राचीन है और अधानु अपने मानवतावादी विचारों और सिद्धांतों के कारण भी प्रासंगिक है। जैन और जैन दोनों ही परम्पराओं में विश्व के उच्च कोटि का निरन्तर उत्थान होता रहा है और उनके आध्यात्मिक संघर्ष के फलस्वरूप तत्त्व दर्शन सदैव परिष्कृत और विकसित होता रहा है। तथा उनकी आलोचना का प्रकाश फैलाने के उद्देश्य से जैन दर्शन के ग्रंथों में चन्द्रसरूर द्वारा रचित अन्ययोगव्यच्छेद्रनार्त्रनाशका पर मनलीन सरूर की स्याद्रदमंजरी को अंतिम स्थान प्राप्त है। स्याद्रमंजरी मेंए मनालीन ने जैन धर्म के अलावा अन्य सभी भारतीय

दार्शनिक विद्यालयों का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। जैसे - वेदांतए मीमांसाए सांख्यए योगए न्यायए वैष्णिकए चरशक और बौद्ध। परन्तु पवित्र श्लोकों की व्याख्या में न्यायिक दार्शनिक के विचारों की समीक्षा की गई है। मनालीन सरूर ने गैर-दार्शनिक सिद्धांतों की आलोचना सिराद्ध के आधार पर की है।

विषय सूची

1. ज्ञानमीमांसा 2. तत्त्वमीमांसा 3. आचारमीमांसा 4. स्याद्वादसिद्धि 5. मल्लिषेण सूरि का मूल्याङ्कन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

30. सिंह (जोरावर)
ध्वनिवादी एवं ध्वनिविरोधी आचार्यों की तर्कणापद्धतियाँ : एक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. मीरा द्विवेदी
Th 26231

विषय सूची

1. ध्वनिवादी एवं ध्वनिविरोधी आचार्य परम्परा एवं उनकी मान्यताएँ 2. भारतीय दर्शन एवं काव्यशास्त्र में तर्क 3. ध्वनिवादी आचार्यों की तर्कणापद्धतियाँ 4. ध्वनिविरोधी आचार्यों की तकणापद्धतियाँ। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

31. सिंह (प्रेम)
वेदों में मानव अधिकार।
निर्देशक : डॉ. विजयशंकर द्विवेदी एवं डॉ. शशि तिवारी
Th 26226

विषय सूची

1. वेद का स्वरूप : एक विमर्श 2. मानवाधिकार कीसंकल्पना : एक विमर्श 3. सामाजिक अधिकार 4. राजनीतिक अधिकार 5. धार्मिक अधिकार 6. आर्थिक अधिकार 7. शैक्षणिक अधिकार। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

32. सीमा
पौराणिक साहित्य का आधुनिक संस्कृत दूतकाव्यों पर प्रभाव।
निर्देशक : प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय
Th 26182

विषय सूची

1. पुराणों से प्रभावित आधुनिक संस्कृत दूतकाव्यों में आदिवाक्य एवं दौत्ययोजन 2. पुराणों से प्रभावित आधुनिक संस्कृत दूतकाव्यों में व्रज्यांगदेशनपा एवं प्राप्यभूमिवर्णन 3. पुराणों से प्रभावित आधुनिक संस्कृत दूतकाव्यों में मन्दिराभिज्ञापन व प्रियासन्निवेशविमर्शन 4. प्रियान्रूपतापत्तिसम्भावना एवं प्रियावस्थाविकल्पन

5. पुराणों से प्रभावित आधुनिक संस्कृत दूतकाव्यों में वचनारम्भ एवं सन्देशवचन 6. पुराणों से प्रभावित आधुनिक संस्कृत दूतकाव्यों में अभिज्ञानदान एवं प्रमंयपरिनिष्ठापन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

33. सीमा रानी
संस्कृत वाङ्मय में तृतीय प्रकृति।
निर्देशक : डॉ. आशुतोष दयाल माथुर
Th 26224

विषय सूची

1. तृतीय प्रकृति- चिकित्सा शास्त्रीय विवेचन 2. संसकृत साहित्य में तृतीय प्रकृति वर्ग 3. तृतीय प्रकृति वर्ग की सामाजिक स्थिति 4. तृतीय प्रकृति वर्ग की धार्मिक स्थिति 5. तृतीय प्रकृति वर्ग की वैधानिक स्थिति। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

34. सुनील कुमार
कुवलयानन्द से प्रभावित अलङ्कार-निरूपक ग्रन्थों का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. आशा तिवारी
Th 26203

विषय सूची

1. भूमिका 2. शब्दालङ्कार 3. सादृश्यमूलक अलङ्कार 3. विराध्गर्भ अलङ्कार 4. न्यायमूलक अलङ्कार 5. गूढार्थप्रतीतिमूलक अलङ्कार 6. चित्तवृत्तिमूलक,अतिशयमूलक एवं शृंखलामूलक अलङ्कार। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।